# इतिहास केवल तिथियाँ नहीं, जीवन-दृष्टि है
# (सचिव, शिक्षा विभाग श्री राकेश कंवर के साथ विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं से भरी चर्चा)

## 20 अप्रैल, 2026

दिनांक 20 अप्रैल, 2026 को सचिव, शिक्षा विभाग हिमाचल प्रदेश सरकार श्री राकेश कंवर जी ने महाविद्यालय का दौरा किया जिसमे उन्होंने महाविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ **"इतिहास केवल तिथियाँ नहीं, जीवन-दृष्टि है"** विषय पर सार्थक चर्चा की। इस चर्चा में विद्यार्थियों ने इतिहास संबंधी अपनी जिज्ञासाओं एवं शंकाओं को दूर करने हेतु शिक्षा सचिव जी से विभिन्न प्रश्न पूछे एवं सचिव महोदय ने विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं एवं शंकाओं को दूर किया।

# इतिहास केवल तिथियाँ नहीं, जीवन–दृष्टि है

(सचिव, शिक्षा विभाग श्री राकेश कंवर के साथ विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं से भरी चर्चा)

**इतिहास की समझ क्यों जरूरी है?**

आज हम इस सवाल का उत्तर जानने की कोशिश कर सकते हैं, मिल कर। लेकिन इससे पहले कि हम इस सवाल के उत्तर को जानने की कोशिश करें मुझे लगता है कि हम इतिहास के बारे में कुछ और जरूरी बातें जान लें, मतलब वे बातें जो मुझे जरूरी लगती हैं।

पहली बात यह है कि इतिहास के बारे में जो भी हम समझते हैं, जानते हैं, या पढ़ते हैं, वह अधूरा है। यह लगभग ऐसा है कि मानों हम एक बहुत बड़े वेयरहाउस में चले जाएं, जहां पूरा अंधेरा हो और हमारे पास एक बहुत छोटी सी टॉर्च हो तो उसे जला कर हम कुछ

एरिया देख लें। जितना दिखता है उसे देखने और समझने की कोशिश करें और उसके आधार पर पूरे वेयरहाउस का अंदाजा लगा लें। हमें कुछ ही हिस्से दिखते हैं, हम उतना ही जान पाते हैं, और बाकी सब जो, अधिकांश भाग है, वह क्योंकि अंधेरे में है, उसके बारे में हम कुछ नहीं जानते, न ही जान पाएंगे। हमारा इतिहास कुछ ऐसा ही है।

लाखों साल से, जब से जब से इंसान पृथ्वी पर है, तब से ऐसा अनुमान है कि कुल मिलाकर हम लगभग 12,000 साल से खेती कर रहे हैं। विज्ञान के मुताबिक की हमें खेती करना आई करीब 12,000 साल पहले। इससे पहले के लाखों सालों के बारे में हमें कोई बहुत ज्यादा मालूम ही नहीं है। थोड़ा बहुत जो लिखा हुआ हमें मिलता है वह आज से चार पांच हजार साल पहले से पीछे नहीं जाता। अगर जाता है तो हम उसे पढ़ नहीं सकते जैसे इंडस वेली का स्क्रिप्ट जिसे हम अभी तक पढ़ नहीं सके। और इंडस वेली की सिविलाइजेशन थी कब, यह भी हमें ठीक से मालूम नहीं। क्योंकि जो भी डेट हमें मालूम है वह भी बहुत ब्रिल है, बहुत ज्यादा सिनपक है। हजार साल इधर, या हजार साल उधर कभी भी हो सकते हैं। और हजार साल बहुत होते हैं।

तो इस तरह जिस इतिहास की हम बात करते हैं, जिसके ऊपर हम लड़ने मरने के लिए तैयार हो जाते हैं, यह कोई ज्यादा पुराना नहीं है। जिसे हम सनातन कहते हैं वह भी शायद आज से तीन–चार हजार साल पहले नहीं जाता। यह बहुत कम समय है, पूरे ब्रह्मांड के इतिहास की दृष्टि से जिसके बारे में हमारी थोड़ी सी समझ है। और यह समझ भी ऐसी है कि इस पर हम सभी सहमत नहीं है।

दूसरी बड़ी बात इतिहास के बारे में यह है कि आज की दृष्टि से जब हम इतिहास को, पिछले वक्त को देखते हैं तो बड़ी दिक्कतें हो जाती हैं क्योंकि हम आज की समझ के मुताबिक अतीत को समझने की कोशिश करते हैं, वह भी अधूरी कोशिश है। यहाँ तक कि आज हमारी भाषा, हमारे शब्द, उन शब्दों के जो मायने है, वह वैसे नहीं है जो आज से 100 साल पहले, 200 साल पहले, या 2000 साल पहले थे। बहुत मामलों में तो वे जबानें भी अब नहीं है जो लोग तब बोलते थे।

इसलिए आज के समय और स्थान से अतीत को देखना अपने आप में एक बड़ी समस्या है। जैसे कोई आदमी कुल्लू आ जाये अमेरिका से, और यहां के देवताओं की व्यवस्था को देखने और समझने की कोशिश करे। उसकी जो दृष्टी होगी, उसकी जो समझ होगी, वो बहुत अलग किस्म की होगी। बाहर से आने वाले अपने संदर्भों से न केवल कुल्लू के वर्तमान को बल्कि कुल्लू के अतीत को जानने, देखने, सोचने, समझने की कोशिश करेंगे। कुल्लू दशहरा जब होता है तो उसको कुल्लू के लोग किस तरह से देखेंगे, देवता के साथ जुड़े हुए लोग किस तरह से देखेंगे, और बाहर से आने वाले मंडी के लोग, शिमला के लोग, किन्नौर, ऊना , कांगडा के लोग या फिर पंजाब, हरियाणा , राजस्थान के लोग किस तरह से देखेंगे, या दक्षिण भारत से आने वाले किस तरह से देखेंगे या फिर किसी दूसरे देश से आने वाले लोग किस तरह से देखेंगे यह उन सभी की अपनी–अपनी सोच, अपनी–अपनी समझ, उनकी पढ़ाई, उनके पूर्वाग्रह आदि बहुत सी बातों पर निर्भर करेगा।

तो इसलिए जब हम किसी भी जगह, किसी भी समय में रहते हुए अतीत को जानने की कोशिश करते हैं तो हमारी अपनी समझ या तो इसमें एक रुकावट का काम करती है या उसको एक अलग किस्म का रंग दे देती है। एक चश्मा है, वर्तमान का, जिससे हम देखते हैं अतीत को। जैसे सती प्रथा है। आज तो सती

होती नहीं। कानून के लिहाज से भी बंद है। तो जब हम आज सती प्रथा को देखते हैं और उसके बारे में कुछ टिपणिया करते हैं तो वह समझ हमारे समय की सोच और समझ के आधार पर बनती है। लेकिन उस समय, उस समाज के लोग सती प्रथा को किस तरह से देखते थे यह हम पूरी तरह से कभी जान नहीं सकते। और उन सब के विचार भी एक से नहीं होंगे।

हम इतिहास को जानने के लिए "सोर्स" ढूंढते हैं। उस समय किसी ने कुछ लिख दिया वह हमारा "प्रमाण" बन जाता है। जैसे हम आजकल लिखते हैं वैसे ही लोग तब लिखते होंगे। आज जो लिखा हुआ है, या जो हम लिखेंगे क्या वह पूरा "सच" होगा। मान लो मैं आज हिंदुस्तान के बारे में कुछ लिखूं, तो क्या यह कहा जा सकता है कि वह सच होगा पूरे देश के बारे में? क्या मेरी इतनी जानकारी है भी कि मैं इतने बड़े देश के बारे में कोई ऐसी चीज लिख सकूं जो पूरी तरह ठीक हो। हमारा देश 150 करोड़ लोगों का है। इतना बड़ा और विविध, हिमालय से लेकर समंदर तक फैला हुआ। जिसके बारे में मुझे खुद ही बहुत कम मालूम है क्योंकि न तो मैंने इस देश को पूरी तरह देखा है, न ही शायद एक जिंदगी में पूरा देख सकूँगा। शायद ही एक व्यक्ति इस विविधता को पूरी तरह समझ सकता है। तो आज अगर मैं कुछ लिखूं और सौ साल बाद लोग उसको पढ़ें और बोलें कि यह "सच" है तो यह एक अधूरी और गलत बात ही होगी। पूरी झूठ तो न हो पर सीमित और अधूरी तो होगी ही। क्योंकि मेरे जानने और लिखने की सीमा है।

इसी तरह आज से सैंकड़ों या हजारों साल पहले जो लोग लिख रहे थे उनकी भी सीमाएं थीं। तो उनकी दुनिया की समझ जितनी थी उसके हिसाब से वे लिखते थे। अगर हम आज यह मान लें कि तब का लिखा हुआ या कहा हुआ बिल्कुल सच है तो यह बात ठीक नहीं होगी।

मान लो किसी ने कुछ लिखा, उससे बिल्कुल उल्टा किसी दूसरे ने लिखा, उससे बिल्कुल अलग किसी तीसरे ने लिखा, तो तीनों बातें अलग हो गईं, इनमें से किसको सच मानें। और अगर इन तीन में से दो चीजें तो गुम हो गई, एक ही बची रही, अब भविष्य में उस एक बचे हुए "प्रमाण" के आधार पर पढ़ने वाले अगर पुराने समय के बारे में समझ बनाएंगे तो एक अधूरा पक्ष ही पूरा सच बन जाएगा।

इतिहास पढ़ते समय हम इन सीमाओं का हमेशा ध्यान रखें, यह जरूरी है। इसलिए जब हम इतिहास पढ़ते हैं तो यह सोच कर पढ़ें कि यह पहले से ही बहुत सी कमियों से भरा है।

आप सब यह भी जानते हैं कि इतिहास आम तौर पर राजा लोग लिखवाया करते थे। और वे अपने बारे में लिखवाते थे। तो अगर मैं अपने बारे में लिखवाऊंगा तो मैं यह नहीं लिखवाऊंगा कि मैं बड़ा कमजोर, बेकार, नशा करने वाला, नासमझ इंसान हूँ, मैं तो लिखवाऊंगा कि ऐसा आदमी दुनिया में पैदा ही नहीं हुआ, इतना तेजस्वी, इतना बड़ा, इतना विद्वान और न्यायप्रिय। मैं अपनी विजयों के बारे में लिखवाऊँगा अपनी हार को छुपाऊँगा। बल्कि हार को जीत बताने की कोशिश करूंगा। अगर कोई मेरे खिलाफ लिखेगा और मुझे पता चल जाएगा तो मैं हुक्म दूंगा कि उसका सर कलम करा दिया जाए, गर्दन उड़ा दी जाए।

इसलिए इतिहास में झूठ और पूर्वाग्रह भी भरे पड़े हैं। विल ड्यूरेंट ने कई दशक तक इतिहास पढ़ने के बाद ग्यारह खंडों में "स्टोरी और सिविलाइजेशन" लिखी है। उन्होंने लिखा है कि इतिहास नब्बे फीसदी तो गैस वर्क है और दस फीसदी बायस है।

तो प्रश्न उठता है कि हम इतिहास क्यों पढ़ें? अगर इसमें इतना झूठ है, पूर्वाग्रह हैं, केवल अनुमान भर है तो क्यों पढ़ें?

इसका उत्तर यही है कि अपनी विरासत को समझने के लिए, गुजरे वक्त के बारे में जानने के लिए, एक विषय के रूप में नहीं बल्कि मजे के लिए पढ़ें। क्योंकि इतिहास बहुत बेहतरीन कहानियों से भरा पड़ा है। और जानने के लिए बहुत कुछ है। नई खोजें हमारी समझ को बिल्कुल बदल देती हैं। उदाहरण के तौर पर अभी 100 साल पहले तक, 1922 से पहले, हमें हड़प्पा मोहनजोदड़ो और सिंधु घाटी की सभ्यता के बारे में कुछ भी पता नहीं था। इसी तरह 1837 में जब जॉन प्रिंसप ने ब्राह्मी लिपि को फिर से पढ़ा तब हमें सम्राट अशोक, अशोक महान के बारे में पता चला। उससे पहले हम भूल चुके थे

कि अशोक महान जैसा भी कोई राजा हुआ है। कहानियों में किस्सों में तो किसी राजा की मौजूदगी भारत और श्रीलंका में थी, लेकिन इतिहास की दृष्टि से, प्रमाण के तौर पर हमें कुछ नहीं मालूम था। और ब्राह्मी लिपि जिसमें इतिहास में अशोक के शिलालेख और उनके स्तंभ, स्तूपों पर लिखा गया था उसे पढ़ना सब लोग भूल चुके थे। इसी तरह अभी 1994 में जाकर तुर्की में ग्योबकली तेपे कर के एक जगह के बारे में पता चला है (यह नाम भी हमने ही दिया है) जो आज से लगभग 11 या 12 हजार साल पहले एक बहुत बड़ी बस्ती थी, विशेषज्ञ कहते हैं कि हो सकता है कि यह एक धार्मिक स्थल था। मान लो कि हम इसे मंदिर कहें, तो क्या यह ठीक होगा। मंदिर तो हमारी शब्दावली है। तब जाने वह लोग क्या कहते होंगे इसे?

तो हम इस सवाल की ओर लौटते हैं कि इतिहास क्यों पढ़ें।

इसके लिए मेरा उत्तर है–

1. मजे के लिए।

2. अतीत से मुक्ति के लिए। और भी जरूरी बात रू अतीत के प्रेत से मुक्ति के लिए।

3. बदलाव को समझने के लिए। युवल नोआ हरारी जो आज के एक बड़े प्रसिद्ध इतिहासकार हैं कहते हैं कि इतिहास मूल रूप में बदलाव की समझ है।

4. वर्तमान और भविष्य को समझने के लिए।

5. अद्भुत कहानियों और कमाल के किस्सों को जानने के लिए।

याद रखें कि यात्री, घुमक्कड़, धर्म उपदेशक, प्रचारक, योद्धा, लड़ाके, खोजी, और व्यापारी इतिहास को बनाने, बदलने, प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक रहे हैं। हमेशा से। शहरों का बनना, सभ्यताओं का बनना और बिगड़ना लगातार चलता रहा है, आज भी चल रहा है। तख्त और ताज मिट्टी में मिलते रहे हैं। इस बदलाव में बहुत से किस्से और सबक छिपे हुए हैं।

यह जानना रोचक होगा कि सुलतानों, राजाओं के जमाने में उनके कारवां के साथ सैंकड़ों, हजारों नहीं लाखों लोग चलते थे। शोधकर्ताओं ने अनुमान लगाया है कि मंगोल कारवां जब चलता था तब लाखों लोग चलते थे। इसी तरह जब औरंगजेब दक्कन के अभियान पर गया तो वह लगभग छब्बीस साल दिल्ली के तख्त पर नहीं बैठ सका वह अपने अभियान के कारण तम्बू में ही रहा। और राजा का तम्बू भी एक नहीं होता था। एक समय में चार तम्बू लगा करते होंगे, एक से, क्योंकि राजा को मारे जाने का खतरा होता था। इसलिए वह किसी भी तम्बू में सो सकता था ताकि किसी को पता न चले। फिर उसके अंगरक्षक, गुप्तचर और सैनिक भी चाहिए थे सिर्फ उसी की सुरक्षा के लिए।

राजा की फौज के लिए, जो लाखों तक पहुंचती थी, खाना बनाने वाले, राशन, सब्जियां, मसाले, बर्तन, दूध, नमक और बाकी सब ताम–झाम के इंतजाम के लिए हजारों लोग चाहिए होते होंगे क्योंकि पूरी `नचचसल बींपद बनानी और लगातार बना कर रखनी होती होगी। फिर आदमियों और जानवरों के डॉक्टर, बीमारों और मरने वालों (आदमियों और जानवरों के) की तम. चसंबमउमदज भी चाहिए होती थी। जहां लंगर या पड़ाव डालता था वहां लगभग पूरा शहर ही बस जाता होगा। सैनिक, सेवादार, खानसामा, वैद्य हकीम, गाने बजाने वाले, चोर उचक्के, चापलूस, सेठ से लेकर मांगने वाले तक, काम जानने वाले और बेरोजगार सभी जुट जाते होंगे। वेश्याएं, व्यापारी, लड़ाके, धर्म गुरु, तमाम तरह के लोग पहुंचते होंगे किस्मत आजमाने। यह लाखों लोगों का एक जीता जागता, चलता फिर्ता हुआ बवे. उवचवसपजंद शहर बन जाता होगा। शोधकर्ताओं ने अनुमान लगाया है कि इसका विस्तार और प्रभाव बहुत व्यापक था। यह कारवां महीनों एक जगह रहता था, और सालों तक सफर में रहता था। कुछ लोग छूट जाते थे, कुछ नए जुड़ जाते थे। और नए लोगों की संख्या भी लाखों तक पहुंच जाती थी। इस सब के बीच में शादियां हो जाती थीं, लोग भगोड़े हो जाते थे, दुश्मन से मिल जाते थे। यह दौर चलता रहता था। इसके बारे में जानना बहुत रोचक है।

इसी तरह अगर आप इब्ने बतुता का किस्सा पढ़ें जो तंजियर से चल कर चीन तक जा पहुंचा, तो बेहद रोमांच होगा आपको। वह पच्चीस–छब्बीस साल तक चलता रहा। और इसी तरह मार्को पोलो इटली से मंगोल सम्राट कुबलई खान के दरबार तक जा पहुंचा। इनकी और इनके जैसे खोजियों की कहानी हैरान करने वाली है।

आईए! एक और अजीब कहानी की बात करते हैं। हम सभी चाय पीते हैं। करीब सौ साल पहले चाय का विशेष प्रचार प्रसार करना पड़ता था और लोगों को जबरदस्ती चाय पिलाने की कोशिश करनी पड़ती थी। चीन में चाय हजारों साल पहले से पी जा रही थी। पर यूरोपीय देशों को इसके बारे में कुछ खब्बर नहीं थी। पुर्तगाली लोगों को चाय के बारे में पता चला। फिर उनसे अंग्रेज इससे परिचित हुए। जब सत्रहवीं सदी के छठे दशक में पुर्तगाल की राजकुमारी की शादी इंग्लैंड के राजा से हुई तो वह अपने साथ चाय पीने की आदत भी ले कर गई। यह वही राजकुमारी थी जिसके दहेज में बॉम्बे का द्वीप अंग्रेजों को और फिर ईस्ट इंडिया कंपनी को मिल गया। चाय की लत दरबार से दरबारियों और आम आदमीयों को लग गई। और चीन से जो चाय आती थी उसके बदले में चीन को चांदी में कीमत अदा करनी पड़ती थी। क्योंकि भारत जहां से सूत,

कपड़ा और मसाले जाते थे और चीन जहां से चाय, चीनी मिट्टी के बर्तन। और सिल्क यूरोप जाता था। चीन और भारत को बदले में कुछ नहीं चाहिए था इसलिए भारत और चीन चांदी में अदायगी मांगते थे। जब सारा सोना–चांदी भारत और चीन में आने लगा तो इंग्लैंड में दिक्कत होने लगी। इसका इलाज इंग्लैंड और ईस्ट इंडिया कंपनी ने यह निकाला कि चीन के लोगों को अफीम की लत लगाई जाए। भारत में एक "अफीम का विभाग" स्थापित किया गया और भारत में कंपनी ने किसानों से अफीम उगवाई और उसे कलकत्ता में बोली लगा कर अवैध तरीके से स्मगलरों के जरिए चीन के ग्वांगजू प्रोविंस तक पहुंचाया जाता था। वहां से अवैध तरीके से चीन में अफीम जाती थी। और बदले में चाय यूरोप जाती थी। यह एक अजीब सा व्यापार था जिसके कारण चीन और अंग्रेजों के बीच दो अफीम युद्ध हुए। चीन ने अफीम बैन कर दी लेकिन इन युद्धों में चीन हार गया। और अफीम व्यापार फिर चल निकला। दुनिया में चाय की कहानी अद्भुत है, इसी तरह कॉफी, मसालों, सिल्क, और कॉटन की कहानी भी दिलचस्प है। यह जानना भी जरूरी होगा कि 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के समय भारत और चीन का विश्व व्यापार में हिस्सा 45 प्रतिशत के करीब था।

हमारे यहाँ से मसाले, सूती कपड़ा पूरी दुनिया में मशहूर थी। ढ़ाका की मलमल, जिसके बारे में कहते हैं कि वह अंगूठी के बीच में से पूरा थान निकल जाता था, बहुत मशहूर थी। इन चीजों की बड़ी मांग थी इनके बदले में हमें उनसे सोना या चांदी मिलता था। हिंदुस्तान और चीन आपूर्तिकर्ता थे। इसीलिए भारत को सोने की चिड़िया कहते थे।

जब चांदी का संकट आया तो लैटिन अमेरिका में सिल्वर ढूंढी गई।

दक्षिण अमेरिका की बर्बादी में एक बड़ा कारण, चांदी है। आपको शायद मालूम हो कि जब स्पेनिश उपनिवेश वहाँ बना तो वहाँ की लगभग नब्बे प्रतिशत आबादी कुछ ही दशकों में बीमारियों से मर गई। क्योंकि ये विदेशी लोग जो जीवाणु और कीटाणु लेकर वहाँ गए, उनसे वहाँ महामारी फैली और बड़ी संख्या में वहाँ के निवासी मारे गए। बहुत से लोग लड़ाई में भी मारे गए। वहाँ से सिल्वर चीन में आई और एक समय ऐसा आया कि इंगलेंड में आलोचना होने लगी। तब अंग्रेजों ने एक तरीका निकाला...उन्होंने हिंदुस्तान में अफीम की खेती शुरू करवाई और चीन को अफीम की लत लग गई।

पुर्तगाली सबसे पहले थे जिन्होंने अफीम का व्यापार शुरू किया, क्योंकि उन्होंने यह समझ लिया था कि चीन में अफीम को "स्मोक" किया जाता है। हिंदुस्तान में अफीम खाई जाती थीकृ कभी बच्चों को सुलाने के लिए दे दी, कभी दवा के रूप में इस्तेमाल कर लिया। यानी अफीम थी, लेकिन वह नशे के तौर पर इस्तेमाल नहीं होती थी।

लेकिन चीन में इसका नशा लोगों को लग गया। इसके बाद ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में "डिपार्टमेंट ऑफ ओपियम" स्थापित किया। आज भी गाजीपुर में गंगा के किनारे में दुनिया की सबसे पुरानी अफीम फैक्टरी चल रही है, जिसे अंग्रेजों ने ही स्थापित किया था।

अफीम की खेती लोगों से जबरदस्ती करवाई जाती थी। ईस्ट इंडिया कंपनी कलकत्ता में उसकी नीलामी करती थी। इसके बदले अंग्रेज चाय खरीदते थे। एक समय चीन के कुछ प्रांतों की लगभग 25: आबादी नशे की चपेट में आ गई। इसके बाद 1839 से 1860 के बीच दो बड़े युद्ध हुए, जिन्हें हम "ओपियम वार" (अफीम युद्ध) के नाम से जानते हैं। आप देखिए कि किस तरह चाय का संबंध अफीम से जुड़ गया। फिर यही संबंध चीनी (शुगर) से भी जुड़ता है। क्योंकि लोगों को चीनी की भी लत लग गई। इसके लिए प्लांटेशन कल्चर शुरू हुआ। ईस्वी 1800 से 1860 के बीच जब गुलामी (slavery) को खत्म करने की प्रक्रिया शुरू हुई तो मजदूरों की कमी हो गई। अफ्रीका से गुलाम लाने का सिलसिला बंद हुआ। तब भारत से "indentured labour" को भेजा गया–बिहार, यूपी, उड़ीसा, बंगाल से लोगों को फिजी, गुयाना, कैरेबियन देशों, बारबाडोस, मॉरिशस आदि जगहों पर ले जाया गया। आज भी वहाँ हिंदी, भोजपुरी और बिहारी बोलने वाले लोग मिलते हैं. ..ये वही लोग हैं जो उस समय गए थे।

दक्षिण अफ्रीका में भी ऐसे ही लोगों के कारण महात्मा गांधी पहुँचे और उनके वकील बने। वहीं से गांधी जी भारत वापिस आए और स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुए। देखिए कि यह पूरी कहानी कैसे चाय, चीनी, नमक, कॉफी जैसी चीजों से बदलती जाती है। और कैसे यह पूरी दुनिया को बदल देती है। इतिहास का एक बहुत महत्वपूर्ण पहलू यही रोचक बदलाव है। इसीलिए हमें इतिहास पढ़ना चाहिए। यह जरूरी नहीं कि आप इसे एक विषय के रूप में पढ़ें. ..आप फिजिक्स, केमिस्ट्री या हिंदी पढ़ते हों, तब भी इतिहास पढ़ सकते हैं। इतिहास हमें हमारे अतीत से जोड़ता है, और ऐसी अनेक रोचक कहानियाँ सुनाता है जो हमारे सोचने का दायरा बढ़ाती हैं।

हम भले ही इतिहास से वर्तमान को पूरी तरह न समझ पाएं या भविष्य को न बदल पाएं, लेकिन यह बेहद रोचक और आनंददायक है। अब अगर आप कुछ पूछना चाहते हैं, तो हम चर्चा कर सकते हैं या जो भी आप पूछना चाहें।

नमस्कार सर मेरा पहला प्रश्न है–

**1. इतिहास की समझ एक छात्रा को क्यों जरूरी है?**

– छात्रा (महिलाओं को) को तो इसलिए भी जरूरी है क्योंकि लगभग सारा इतिहास पुरुषों ने लिखा है। महिलाओं ने इतिहास बहुत कम लिखा है। कुछ महिलाओं ने महिलाओं की दृष्टि से इतिहास लिखा है आप उन किताबों को पढ़ सकते हैं। लेकिन जब भी आप इतिहास पढ़ें तो आप यह देखेंगे कि महिलाओं की स्थिति, उनकी भूमिका, या समाज में उनके स्थान के बारे में पुरुषों के दृष्टिकोण से ही व्याख्या की गई है।

**2. यदि इतिहास पूरी तरह सत्य नहीं है तो हमें उसे किस दृष्टिकोण से पढ़ना चाहिए?**

– इसी समझ से कि जो लिखा गया है वह पूरा सच नहीं है। वह कहानी का एक हिस्सा भर है। एक या बहुत से हिस्से छूट गए हो सकते हैं, या छोड़ दिए गए हैं या वो हिस्से गुम हैं और कभी पता ही नहीं चलेंगे। और फिर यह भी तो एक जरूरी बात है कि हमारी खुद की समझ भी 'पूर्ण' नहीं होती। मुझे लगता है कि जानने की यह यात्रा चलती रहनी चाहिए। और यात्रा में मजा आना चाहिए।

**3. क्या इस आधुनिक युग में इतिहास की भूमिका काम हो रही है या बढ़ रही है।**

– मुझे पता नहीं। मेरे ख़याल में इतिहास की भूमिका वही है जो हम उसे देते हैं। और वर्तमान में तो इतिहास एक लड़ाई का मैदान जैसा है।

**4. क्या इतिहास खुद को दोहराता है क्योंकि मुझे लगता है मान्यवर जी अतीत के भूत से मुक्त होने की बात आपने की उस भूत से अभी तक कोई मुक्त नहीं हो पाया है क्या आप इससे सहमत है।**

– हां, भूत छूट नहीं रहे। प्रेत मुक्ति कठिन है। इतिहास खुद को दोहराता है क्योंकि हम इंसान मूर्खता करने से हटते नहीं।

**5. क्या सारा इतिहास सत्य हो सकता है या फिर किसी कल्पना के आधार पर लिखा हुआ।**

– इतिहास एक खिचड़ी है, सत्य, तथ्य, विचारों, और कल्पना के साथ बनी जिसमें कुछ लोग झूठ का तकड़ा भी लगा देते हैं नमक, मिर्च और मसाले के साथ।

**6. क्या हमें अपने अतीत पर गर्व करना चाहिए या उससे सीख कर आगे बढ़ना चाहिए।**

– मुझे लगता है सीखना ज़्यादा जरूरी है। अतीत पर गर्व करना गलत नहीं है पर उसे किसी और के खिलाफ हथियार की तरह इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

**7. मान्यवर आपने कहा हमें भविष्य पीछे तथा इतिहास को आगे रख कर चलना चाहिए क्या यह सत्य है इस कथन को स्पष्ट कीजिए।**

– यह एक जापान से आया विचार है कि इतिहास हमारे सामने फैला हुआ है, और भविष्य पीछे से आता है (क्योंकि हम पीछे देख नहीं सकते) जो अनजान है, अदृश्य है और अचानक प्रकट होता है। मुझे लगता है कि यह एक अच्छा बिम्ब है इतिहास और समय के साथ हमारे संबंध को समझने के लिए। यह एक सोचने का तरीका है, सच या झूठ नहीं।

**8. यदि इतिहास हमें अतीत की गलतियों से सीखने का अवसर देता है, तो फिर समाज बार–बार वही गलतियाँ क्यों दोहराता है?"**

– मुझे ऐसा लगता है कि इतिहास से सीखना बड़ा मुश्किल है क्योंकि हम अपनी गलतियों से ही नहीं सिखाते तो दूसरों की गलतियों से, वह भी ऐसे लोगों की जो कभी पहले वक्त में रहे हैं, सीखने की आदत बन पाना बड़ा मुश्किल है। दूसरी चीज शायद यह है कि अच्छी बातें पढ़ाई लिखाई में तो हम पढ़ लेते हैं लेकिन उसको समझ कर अपने व्यवहार में नहीं लाते। यही कारण है कि हम इतिहास की गलतियों को दोहराते हैं। युद्ध करते हैं, युद्ध में लोग मरते हैं, फिर बाद में उनके लिए आंसू बहते हैं और यह कहते हैं कि युद्ध बुरी चीज है। लेकिन उसके बाद फिर युद्ध करते हैं। हमारा अहंकार इतना बड़ा हो जाता है कि हम दूसरे को मिटा देने के लिए तैयार हो जाते हैं, कत्ल करते हैं, अपराध ा करते हैं। यह एक ऐसा चक्र है जिसे तोड़ पाना इंसान के लिए संभव नहीं हो पाया है। शिक्षा इसे संभव कर सकती है लेकिन शिक्षा से भी वह संभव नहीं हो रहा। यह तो दिखता ही है। लेकिन फिर भी कुछ लोग कोशिश करते हैं की युद्ध ना हो उनकी आवाज अगर सुनी जाए तो शायद हम युद्ध बंद कर दें।

बात कुल मिलाकर वही लगती

है कि हमारी मूर्खता की कोई सीमा नहीं है। एक प्रजाति के तौर पर हम अजीब सा व्यवहार करते हैं। हम चांद पर चले जाएंगे लेकिन अपने पड़ोसी से लड़ेंगे। हम दुनिया की सबसे बेहतरीन दवाई बना सकते हैं लेकिन वातावरण को इतना प्रदूषित कर देंगे की बीमारियां खत्म न हो और हवा ही जहरीली हो जाए।

**9. आज के युवाओं में इतिहास के प्रति रुचि कम होती जा रही है, इसे रोचक बनाने के लिए क्या बदलाव जरूरी हैं?**

– मुझे लगता है कि एक विषय के रूप में जब हम स्कूल में पढ़ते हैं तो इतिहास हमें नीरस लगता है। कुछ शायद किताबों की कमी है कि वे नीरस और उबाऊ होती हैं और कुछ पढ़ाने वालों की कमी हो सकती है कि वे विद्यार्थियों में उतनी रुचि नहीं जगा पाते। मैं ठीक ठीक कुछ बता नहीं सकता सिवाय इसके कि अगर कभी हमारे में यह रूचि पैदा हो जाए तो हमें खूब पढ़ना चाहिए।

**10. "क्या वास्तविक स्वतंत्रता सिर्फ बाहरी नियंत्रण से मुक्ति है, या अपने विचारों को समझना और नियंत्रित करना भी जरूरी है? और इसमें शिक्षा की क्या भूमिका हो सकती है?"**

– स्वतंत्रता बड़ा उलझा हुआ प्रश्न है। एक मशहूर कथन है कि छड़ी घुमाने की आपकी स्वतंत्रता वहां समाप्त हो जाती है जहां मेरी नाक शुरू होती है। दर्शन शास्त्र में free will vs determinism की एक लम्बी बहस है, जिसका आज तक कोई हल नहीं निकला, क्योंकि कुछ सवालों के एकदम पक्के जवाब शायद हो नहीं सकते।

स्वयं को समझना और अपने पर नियंत्रण करना तो पूर्व की (भारत, चीन, जापान) की परम्परा का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। यह कठिन काम है। और हम बाहरी नियंत्रण से पूरी तरह मुक्त भी हो नहीं सकते। बहुत कुछ ऐसा है जो हमारे नियंत्रण से बाहर होता है। कुल मिला कर एक balance बनाने की बात है। शिक्षा हमें इन सवालों के उत्तर ढूंढने के लिये तैयार कर सकती है। शिक्षा हमें औजार उपलब्ध करवाती है। लेकिन शिक्षा एक औजार ही है, इस्तेमाल हमें स्वयं करना है।

**11. "क्या एक व्यक्ति को इतना सक्षम होना चाहिए कि वह अपने सवालों के उत्तर स्वयं खोज सके, या सीखने की प्रक्रिया में दूसरों से प्रश्न करना भी उतना ही आवश्यक है?"**

– व्यक्ति अगर इतना सक्षम हो जाए कि वह अपने सवालों के उत्तर स्वयं ढूंढ़ ले तो इससे बेहतर बात कुछ नहीं है। पर यह खोज दूसरों से प्रश्न करने की प्रक्रिया से गुजर कर आसान हो सकती है। चर्चा और विमर्श एक आवश्यक और महत्वपूर्ण तरीका है। हां, दूसरों के उत्तर से प्रभावित न हो कर यह जानने की कोशिश करें कि ये उत्तर आपकी कसौटी पर खरे उतर रहे हैं या नहीं।

हम औरों के अनुभवों से जल्दी जान और सीख सकते हैं पर यात्रा सभी की अपनी अपनी होती है।

**12. क्या हमारी शिक्षा प्रणाली में writing और communication skills पर पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है? अगर नहीं, तो इसे कैसे बेहतर बनाया जा सकता है?"**

– सही कहा। क्योंकि अभी ऐसा है नहीं, इसलिए हमें खुद ही मेहनत करनी पड़ेगी। कुछ शिक्षा संस्थान creative writing के कोर्स करवाते हैं। उनकी अपनी भूमिका है पर उनके बाद भी असली सिखलाई तो खुद लिख और बोल कर होगी। अब धीरे–धीरे हमारे पाठयक्रम इन कौशलों पर ध्यान देने लगे हैं। Critical thinking, communication skills, relationship building, problem solving, creative writing आदि skill धीरे धीरे mainstream हो रहे हैं।

13. "हमारी शिक्षा प्रणाली में हमें कवियों और लेखकों के बारे में तो पढ़ाया जाता है, लेकिन उनके जैसा बनने या खुद लिखने की प्रक्रिया पर कम ध्यान दिया जाता हैकृक्या इसमें बदलाव की जरूरत है?"

– कुछ उत्तर तो पिछले सवाल के जवाब में आ गया है। हम बड़े लेखकों का लिखा पढ़ कर भी बहुत कुछ जानते हैं। पर खुद लिखना सीखने के लिए तो हमें ही कलम चलानी पड़ेगी। तैरना सीखने के लिए, तैरने की किताब पढ़ने से ज़्यादा जरूरी है पानी में उतरना। हमें कोच या गाइड मदद कर सकते हैं पर सीखना तो खुद ही पड़ेगा।

14. "आज कई डिग्रीधारी युवा बेरोजगार हैं, ऐसे में शिक्षा प्रणाली को रोजगार से अधिक जोड़ने के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं?"

– सामान्य शिक्षा (व्यवसायिक शिक्षा भी) बाजार की मांग से पीछे चलती है। अब skill और vocational education को सामान्य शिक्षा में mainstream करने के प्रयास चल रहे हैं पर उसमें समय लगेगा। और हम सभी skill एक साथ सिखा भी नहीं सकते। कुछ skill, वद जीम रवइ ही सीखे जाते हैं या formal education system के बाहर। अब तो lifelong learning की भी बात हो रही है। E-perts कह रहे हैं कि एक व्यक्ति को जीवन में बहुत बार अपनी स्किल सेट को renew करना पड़ेगा।

15. "छात्रों में व्यावहारिक ज्ञान और जीवन कौशल (life skills) विकसित करने के लिए शिक्षा विभाग क्या प्रयास कर रहा है?"

– अब बहुत से प्रयास हो रहे हैं। प्राइमरी स्तर से ही life skills को शिक्षा व्यवस्था में एकीकृत किया जा रहा है। आने वाले समय में इसके सकारात्मक परिणाम आएंगे।

16."क्या शिक्षा प्रणाली में ऐसे बदलाव किए जा रहे हैं जिससे डिग्री के साथ रोजगार की संभावना भी बढ़ सके?"

– शिक्षा और रोजगार का सम्बन्ध एकदम सीधा नहीं है। School Education, Foundational Stage (3 years of pre school and 2 years of primary

school) का focus Reading, Writing और Numeracy पर है। फिर तीन साल की प्राइमरी एजुकेशन, तीन साल की मिडल और दो साल की हाई स्कूल शिक्षा के कक्षा आधारित कौशल और learning outcomes तय हैं। इन सभी स्तरों में इक्कीसवीं सदी के कौशल और उभरती तकनीक की समझ भी शामिल है। व्यवसायिक और कौशल आधारित शिक्षक को भी जोड़ा जा रहा है।

आगे चल कर उच्च शिक्षा में विशेषज्ञता तथा विशिष्ट पाठयक्रम विद्यार्थी को उपलब्ध होते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य समझ विकसित करना भी है, नागरिक और संवैधानिक समझ बनाना भी है, सिर्फ उद्योग की मशीन के पुर्जे बनाना नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य इंसान होने की समझ पैदा करना भी है। आखिर में सब सीखने वाले पर भी निर्भर करता है।

17- Did Britain leave India in 1947 mainly because World War-2 weakened its economy and control] rather than due to Gandhi's movements?

- Dear Ashutosh! this is a very good question- Often, we try to find easy and quick answers about our past and as a result, we try to give simplistic e-planations- Also we make theoretical generalisations which are either incorrect or just easy to understand.

Reality is often more layered and nuanced- It is comple- Several actors (human and non human), several factors (local and global) and several forces (often competing and times complimenting) play their role in shaping history- Most of the times, we do not even know, which of these contributed to the events and to what e-tent.

When historians present their thesis, they overlook certain facts, and overstate certain others depending upon their preferences and personal ideologies.

Available sources also colour judgement- Then there is the need to distinguish facts from opinions.

Now, coming to India's independence.

Mahatma Gandhi played a huge role and he was the one who made millions rally behind him; role of other leaders (Nehru, Patel, Maulana Azad and several others) was also important; the revolutionaries (from Aurobindo Ghosh to Bhagat Singh) played their role; the Indian National Congress (from 1885) was also a major catalyst; Subhash Bose and his INA; British Education (most of our leaders at the time of independence were barristers educated in England); the international factors like world war, weakening of the empire, idea of colonialism losing its sheen, rising nationalism in former colonies and overall geopolitical situation were also important factors.

So, it was not Mahatma Gandhi alone who got us independence.

Moreover, we should not forget unsung heroes, the foot soldiers of independence movement whose names we don't know, who sacrificed their careers and lives for the movement and energized the movement at ground level.

So, I will say that from local to global several factors, situations and several personalities played their role in this watershed moment in the history of India and the world.

While, based on our knowledge and understanding we may give more (and/or less) credit to someone/something we must not make the mistake of picking up one person and/or event as the singular reason of something that involved millions of persons and countless combinations at a particular time (not just at a particular point in time but over a period of time).

We, as a student of history, must form an opinion after reading different e-planations and perspectives, and we need not agree with any of those- We can form our own different opinion but we must know the pitfall of generalizations and simplistic and easy e-planations.

**18. आपने कहा कि इतिहास का बड़ा हिस्सा अभी भी अज्ञात है। क्या मानव कभी उस अज्ञात इतिहास को पूरी तरह जान पाएगा, या इतिहास हमेशा कुछ हद तक अधूरा ही रहेगा?"**

– मुझे लगता है कि सब कुछ पूरा पूरा जान पाना संभव नहीं है।

**19. आपने बताया कि हम जो इतिहास जानते हैं, वह कई बार अधूरा होता है। क्या अधूरा ज्ञान हमें गलत निष्कर्षों तक पहुँचा सकता है?**

– बिल्कुल।

**20. आपने कहा कि वर्तमान देशों की सीमाएँ पहले ऐसी नहीं थीं। क्या भविष्य में समय के साथ ये सीमाएँ कम या समाप्त हो सकती हैं, या यह केवल एक आदर्श कल्पना है?**

– बदल सकती हैं। कुछ भी हो सकता है। कम से कम इतिहास तो यही बताता है। बड़ी बड़ी सभ्यताएं मिट जाती हैं। तख्त और ताज मिट्टी में मिल जाते हैं। सीमाएं बदलती रही हैं। आगे भी बदल सकती हैं।

**21. आपके अनुसार इतिहास पढ़ने से हम बेंजम और तमसपहपवद से जुड़ी ध ाारणाओं से मुक्त हो सकते हैं। क्या आप स्पष्ट कर सकते हैं कि इतिहास हमें इन सामाजिक विभाजनों से ऊपर उठने में कैसे मदद करता है?**

– सबसे पहले तो हम यह जानते हैं कि

ये अभी विचार (जैसे धर्म और जाति) हमने बनाए हैं, ईश्वर ने नहीं। इनके बनने और विकसित होने के पीछे बहुत से ऐतिहासिक, आर्थिक, सामाजिक कारण रहे हैं। और इनका स्वरूप समय समय पर बदलता रहा है। ये शाश्वत, ईश्वरीय धारणाएं नहीं हैं। इसीलिए इन्हें बदला जा सकता है। इनसे मुक्त हुआ जा सकता है।

**22. यदि कॉस्मिक कैलेंडर के अनुसार मानव सभ्यता केवल कुछ सेकंड के बराबर है, तो क्या हमारा ज्ञान भी उतना ही सीमित और अस्थायी माना जाना चाहिए?**

– बिल्कुल। सही पकड़ा है आपने।

**23. आपने अपने वक्तव्य में कुछ ऐतिहासिक कहानियाँ साझा कीं। क्या आप स्पष्ट करेंगे कि उन कहानियों का मुख्य उद्देश्य क्या था और उनका वर्तमान समय से क्या संबंध है या नहीं, यदि है तो कैसे ?**

– उनका उद्देश्य इस ओर इशारा करना था कि इतिहास कितनी रोचक किस्से कहानियों से भरा है जिनसे हम सीख सकते हैं। वर्तमान से उनका संबंध है, यह कड़ियां जुड़ते हुए ही हम वर्तमान तक पहुंचे हैं। इन्हें जान कर हम अतीत, वर्तमान और भविष्य को लेकर बेहतर समझ बना सकते हैं।

**24. अगर इतिहास हमें चेतावनी देता है तो फिर मानव सभ्यता बार बार संघर्ष और युद्ध में क्यों फंसती है?**

– यह मेरे लिए यह अबूझ किस्म की पहेली है। कुछ विशेषज्ञों ने इस पर जरूर शोध किया होगा, मुझे इसके बारे में ज्यादा पता नहीं है।

मुझे लगता है कि हर पीढ़ी पिछली पीढ़ियों को मूर्ख मान कर उसी मूर्खता को दोहराती है जो पिछली पीढ़ी ने की। हमारे हथियार और युद्ध के परिणाम और अधिक भयानक होते जाते हैं पर हम अतीत से सीखने की बजाय 'नया' युद्ध छेड़ देते हैं।

हम अपने अनुभवों से ही इतना कम सीखते हैं, दूसरों के अनुभवों से सीखना और भी कम है। अतीत के अनुभवों से सीखना तो और भी विरल है। और तो और हम जानते हुए भी विनाश को चुन लेते हैं, यह हैरान करने वाला है। बहुत से विचारकों ने ठीक ही कहा है कि इंसान की मूर्खता की सीमा नहीं है, ज्ञान की सीमा भले ही हो।

**25. अगर हर पीढ़ी इतिहास का पुनर्लेखन करती है तो सच्चा इतिहास कहीं है भी?**

– 'सच' और 'सच्चा' इतिहास शायद हो नहीं सकता। यह भी सोचिए कि 'क्या सच भी अनुभव से सीमित ही नहीं है?'

सच भी तो व्यक्तिगत और देश काल से बंधा होता है और सच के भी कई पहलू होते हैं। बहुत बार मेरा सच आपके सच से अलग हो सकता है। इतिहास को ष्सचष् के लिए नहीं जानना चाहिए, क्योंकि ऐसा लगभग असंभव है। फिर भी इतिहास को जानना जरूरी है। एक हाथी को पांच अंधों ने जिस तरह समझा, हम उसी तरह इतिहास को समझते हैं। यह अंधों वाली कहानी पढ़िए।

**26. मौखिक इतिहास को जानना और उसे लिखित रूप में संजोना हमेशा से होता रहा है। हमारी लिखित परम्परा मौखिक से ही आई है। लाखों साल हम मौखिक परम्परा से ही चलते रहे हैं। दरअसल हुआ यह कि, एक भाषा या कुछ बड़ी भाषाएं, विजेताओं की भाषा ने हारे हुओं की भाषाओं, बोलियों, और मौखिक आख्यानों को 'खा' लिया। जब भाषाएं, बोलियां और लिपियां समाप्त हुईं तो उनके साथ साथ हमारे इतिहास का उतना हिस्सा भी मरता गया। बहुत से लोग और संस्थाएं भाषाओं, बोलियों और परम्पराओं (मौखिक और लिखित) के संरक्षण में आज भी काम कर रहे हैं।**

– जी हां। बहुत सी किताबें जान बूझ कर सत्ता और विचारधारा के औजार के रूप में इस्तेमाल की जाती रही हैं। आगे भी होती रहेंगी।

**27. ज्यादा पढ़ने लिखने से निर्णय की क्षमता कम भी हो सकती है। कई पक्ष देख कर एक पक्ष को चुनना कठिन हो सकता है। पढ़ना लिखना in-formed decision लेने की क्षमता को भी बढ़ाता है।**

– आपकी यह बात है बहुत कमाल की, कि हम किताबें पढ़कर लेखक के एक संस्कृत संस्करण भी बन सकते हैं। यह बिल्कुल ठीक है कि यह संभव है। यह बुरा भी हो सकता है अच्छा भी।

हमें यह अपनी सोच और अपनी मानसिक ताकत के माध्यम से तय करना होगा कि क्या हम किसी एक लेखक के संस्कृत संस्करण बन गए हैं या किसी एक विचार के गुलाम बन गए हैं।

जरूरी बात यह है कि हम बदलने के लिए तैयार रहें। नया सीखने के लिए तैयार रहें।

यह बहुत हद तक एक बेहद निजी और व्यक्तिगत प्रक्रिया है जिससे हर व्यक्ति को गुजरना है। यह एक अकेली यात्रा है। हर पाठक इस यात्रा को अपने तरीके से करता है और अपने ही तरीके से कर सकता है। किताबें बहुत ज्यादा लिखी गई हैं समय पढ़ने के लिए बहुत कम है इसलिए चुनाव की महत्ता बढ़ जाती है। अच्छे विचार या अच्छे लेखक का समर्थकहो जाना बुरा तो नहीं है लेकिन अच्छे की परिभाषा भी तो नितांत व्यक्तिगत है इसलिए यह मसला और ज्यादा उलझ जाता है।

28. किताबें अपने आप से स्वतंत्र सोच नहीं देती, हमें अपनी सोच स्वयं विकसित करनी होती है और हम किताबों के जरिए स्वतंत्र सोच को ज्यादा अच्छे से विकसित कर सकते हैं। किताबों का चयन भी महत्वपूर्ण है। किताब हमारे दिमाग को भ्रमित भी कर सकती है। ऐसे में, चर्चा, 'दूसरे पक्ष को जानना', पढ़े हुए को critically जांचना यह सब भी महत्वपूर्ण बन जाता है। हम लेखक के विचारों से प्रभावित होते हैं यह स्वाभाविक है और हम अपनी अलग समझ भी बनाते हैं। यह चलता रहता है।

– बहुत बढ़िया सवाल। अगर दो लोग एक ही किताब पढ़ते हैं तो मेरे समझ के मुताबिक, जो मुझे लगता है, यह दो किताबें हो जाती हैं। असली किताब वह हुई जिस तरह से उसे हमने पढ़ा और समझा।

बल्कि दो लोग ही क्यों, एक ही व्यक्ति एक ही किताब को दो बार पढ़े, अलग–अलग समय में, या अलग–अलग उम्र में, तो वह दो तरह से समझी जाती है या कई तरह से समझ आती है। किताब, उसके पात्र और घटनाएं भले ही वह fiction या non-fiction

हो, उससे हम अपने तरीके से ही रिलेट करते हैं।

तो यह multiple e-periences, multiple layers of e-periences बन जाते हैं।

इसलिए किसी एक किताब को बार–बार पढ़ना या अलग–अलग लोगों का एक ही किताब को पढ़ाना एक अलग अर्थ और एक अलग अनुभव प्रदान करता है जो निरंतर बदलता भी रहता है या कभी एक सा भी रहता है।

29. Kya Itihas ka Anne wale samy par prabhav padta hai?

– इतिहास की घटनाओं का आने वाले समय पर प्रभाव पड़ता है। एक दूसरे से कड़ियां जुड़ती चली जाती हैं और वर्तमान के कार्यों से भविष्य आकार लेता है।

लेकिन मुझे यह भी लगता है कि यह सीधा, एक दम प्रत्यक्ष और एकदम इकहरा प्रभाव हो ऐसा शायद नहीं होता। घटनाएं आम तौर पर अपने बहुत गुंथी हुई, एक दूसरे से जुड़ी हुई और कई परतों वाली होती हैं, उनमें से किस कारक का आने वाले समय पर कितना प्रभाव पड़ेगा यह जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं तो अंदाज भर लगा सकते हैं। जब हम वर्तमान में होते हैं तो शायद हम यह समझ नहीं पाते कि हम भविष्य को किस तरह से प्रभावित कर रहे हैं या करेंगे और इसी तरह वर्तमान में होते हुए जब हम अतीत को देखते हैं तो भी पूरी तरह समझ नहीं पाते कि किस घटना ने वर्तमान को किस तरह से प्रभावित किया। यह कहना कि जो भी घटता है उसका भविष्य पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता गलत होगा। कितना, कैसा और किस हद तक प्रभाव पड़ता है यह तय करना मुश्किल जरूर है (और यह भी हमारे दृष्टिकोण पर निर्भर करेगा) मगर प्रभाव पड़ता जरूर है। ■